समस्त संसार का धर्म

श्री शोक़ी अफन्दी रब्बानी वली अमरुल्लाह

द्वारा लिखित

समस्त संसार का धर्म

उसके उद्देश्यों, शिक्षाओं और इतिहास का सारांश

(श्री शोक़ो अफन्दी वली अमरुल्लाह द्वारा लिखित)

बहाइयों का मत है कि हज़रत बहाउल्लाह ने जिस धर्म की घोषणा की है वह ईश्वर का भेजा हुआ धर्म है। इस धर्म का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि संसार के सब मत इस के अंदर आ जाते हैं। इसकी दृष्टि व्यापक और इसकी कार्यप्रणाली ज्ञान पर निर्धारित है । इसके नियम मनुष्यों में प्रेम फैलाने वाले हैं और इसका प्रभाव मनुष्यों के हृदयों में कार्यशक्ति उत्पन्न करता है।

बहाइओं का मत है कि उन के धर्म का प्रवर्तक इस बात की घोषणा करने के लिये नियत हुआ था कि धार्मिक सत्यता संपूर्ण नहीं वरन उन्नतिशील है, अर्थात् ईश्वर की वाणी जारी रहती है और उसमें उन्नति होती रहती है। पहले मतों के प्रवर्तकों की शिक्षायें यद्यपि अस्थायी प्रथाओं में एक दूसरे से भिन्न हैं परन्तु वह सब

"एक ही तम्बू में स्थित, एक ही आकाश में उड़ने वाली, एक ही सिंहासन पर विराजमान, एक ही वचन बोलने वाली, एक ही आज्ञा के देने वाली हैं।"

बहाइयों ने व्यवहार से यह प्रमाणित कर

दिया है कि हज़रत बहाउल्लाह् के मत का मौलिक सिद्धान्त मनुष्यमात्र की एकता या विश्व-व्यापी मानुषिक बरादरी है । और यही सिद्धान्त मनुष्यमात्र के विकास का अन्तिम पद है । उन का यह दावा है कि इस महान विकास का इस अन्तिम मन्ज़िल (अर्थात् मनुष्यमात्र की एकता) तक पहुँचना न केवल आवश्यक वरन् अटल है । वह यह भी कहते हैं कि यह अन्तिम मन्ज़िल धीरे २ निकट आ रही है और वही ईश्वरीय सन्देश इसे स्थापित करने में सफल हो सकता है जिस का यह दावा हो कि इस की सहायता पर दैवी शक्ति हो ।

बहाई मत ईश्वर और उसके अवतारों की एकता का मानने वाला है । सत्य की बिना रोक

ठीक स्वतंत्रता से खोज करने के सिद्धान्त का समर्थक है। सर्व प्रकार के मिथ्या विश्वास और हठ धर्म का खंडन करता है। एकता और प्रेम की शिक्षा देता है और सिखाता है कि एकता और प्रेम ही धर्म का वास्तविक उद्देश्य है। धर्म और विज्ञान को एक दूसरे का समर्थक और सहायक समझता है। धर्म को शान्तिमय, सभ्य और उन्नतिशील समाज का अन्तिम और एक मात्र आधार समझता है। स्त्री पुरुष के समान अधिकारों का अग्रदूत है। अनिवार्य शिक्षा का प्रतिपादक है। अमीरी और गरीबी के परस्पर संघर्ष को रोकता है अर्थात् न तो अत्यन्त धनाढ्यपन के पक्ष में है और न ही अत्यन्त धन-हीनता को पसंद करता है। काम जो सेवाभाव

से किया जाये उसे भक्ति जानता है। एक सहायक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा धारण करने की सिफारिश करता है और एक स्थायी लोक-शान्ति की स्थापना के ढंग बताता है और उसकी देखरेख और रक्षा के साधन जुटाता है।

यह धर्म १९वीं शताब्दी के मध्य में ईरान देश में जो उस समय परम अन्धकारमय देश था आरम्भ हुआ। आरम्भ होते ही हठधर्मी और धार्मिक हिंसा की शक्तियों ने चारों ओर से उस पर हल्ला बोल दिया। इस के शुभसम्वाद देने वाले की हत्या की गई। इसके प्रवर्तक को देश देश में निर्वासित किया गया। इस के फैलाने वाले को लगभग आयुपर्यन्त नज़रबंद रक्खा गया। इस के अनुयाइयों में से कम से कम

२०००० को घोर से घोर कष्ट देकर मौत के घाट उतारा गया। इस पर भी यह धर्म शान्ति और दृढ़ता पूर्वक पूर्व और पश्चिम में फैलता गया और फैलता जा रहा है। इस समय तक संसार के कम से कम चालीस देशों में पूर्ण रूप से स्थापित हो चुका है और हाल ही में कई देशों में धार्मिक और राष्ट्रीय अधिकारियों ने इसे एक पृथक् स्थायी धर्म मान लिया है।

इस मत के सम्वाददाता शीराज़ के रहने वाले सय्यद अली मुहम्मद थे। आप बाब के शुभ नाम से प्रसिद्ध हैं। आपने २३ मई सन् १८४४ के दिन अपनी दोहरी नियुक्ति की घोषणा की कि आप एक स्थायी ईश्वरीय प्रकाश हैं और अपने से एक बड़े ईश्वरीय

प्रकाश के शुभ सम्वाद देने वाले हैं। आप ने यह भी फरमाया कि आने वाला महान प्रकाश मनुष्य मात्र के धार्मिक इतिहास में एक नये और अद्वितीय अध्याय का श्रीगणेश करेगा।

आपके जीवन, आपके कष्टों, आपके शिष्यों की वीरता और आपके हृदय-विदारक बलिदान के वृत्तान्त यहाँ लिखने की आवश्यकता नहीं, क्यों कि आपके पवित्र जीवन का सम्पूर्ण वृत्तान्त "डान ब्रेकरज़" (बहाई मत के आरम्भ का इतिहास) में ब्योरेवार स्पष्ट रूप से लिखा है। यहाँ केवल इतना लिखना पर्याप्त होगा कि हज़रत बाब को ६ जुलाई सन् १८५० के दिन ईरान के तबरेज़

नगर में एक फौजी दस्ते ने गोली मार कर शहीद कर दिया और उसी दिन शाम को आपके शव को बारकों के आँगन से नगर के फाटक से बाहर खाई में फेंक दिया जहाँ से रात को आपके परम भक्त शिष्य उसे उठा कर तेहरान ले गये। यहाँ यह उस समय तक छुपा कर रक्खा गया जब तक इस को पवित्र भूमि में ले जाना सम्भव न हुआ। आप के कुछ शिष्यों ने हज़रत अब्दुलबहा के आदेशानुसार उस सन्दूक को जिसमें आप का शव था भारी कठिनाइयों और बड़े संकटों के होते हुये हैफ़ा पहुँचा दिया। सन् १९०९ में हज़रत अब्दुलबहा ने अपने पवित्र हाथों से कई बहाई संस्थाओं के प्रतिनिधियों के सामने

इस शव को उस रौज़े में दफ्न किया जो आप ने इसके लिए विशेष रूप से बनवाया था। उस समय से बहाई मत के असंख्य अनुयायी इस पवित्र स्थान के दर्शनों के लिये आते रहते हैं। इस स्थान की पवित्रता सन् १९२१ में और भी अधिक हो गई क्योंकि उस वर्ष हज़रत अब्दुलबहा का शव भी इसी इमारत के एक कमरे में दफ्न किया गया।

इस मत के जन्म-दाता हज़रत बहाउल्लाह हैं। आपके प्रकट होने का शुभ संवाद हज़रत बाब ने दिया था। हज़रत बहाउल्लाह ने अपने ईश्वर की ओर से भेजे जाने की स्पष्ट घोषणा सन् १८६३ में की। आप उस समय बग़दाद में नज़रबन्द थे। इस घोषणा

के बाद आप ने उस नये मत और ईश्वरीय सभ्यता के नियम दिये जो आप के कथनानुसार आप के प्रकट होने से इस संसार में आरम्भ हो गया है। आपका भी कड़ा विरोध किया गया। आपकी सारी जायदाद जब्त कर ली गई और आपको पहले इराक़ फिर कुसतुन्तुनिया, फिर ऐडरियानोपल और फिर हत्यारों और घोर अपराधों के अपराधियों के कैदखाने अक्का में कैद रक्खा गया। यहाँ सन् १८९२ में ७५ वर्ष की आयु में आप ने परलोक गमन किया। आपका शव अक्का के उत्तर में बहजी नामक स्थान में एक रौज़े में दफ्न है।

हज़रत बहाउल्लाह के शुभ वचनों के प्रमाणित

भाष्यकार और आप के मत के प्रथम फैलाने वाले आप के ज्येष्ठ पुत्र हज़रत अब्दुलबहा हुये। आप के पिता ने आप को भक्ति का केन्द्र ठहराया और सब बहाइयों को आदेश दिया कि पथप्रदर्शन और नेतृत्व के लिये सब आप की ओर निहारें।

हज़रत अब्दुलबहा बालपन से ही अपने पिता के साथ उन के कष्टों और विपत्तियों में साथ रहे। सन १९०८ तक आप कैद में रहे। उस वर्ष तुर्की में पुरानी शासन प्रणाली के बदल जाने पर अपने राज्य भर में समस्त राजनैतिक और धार्मिक कैदी मुक्त कर दिये गये। छूटने के बाद आप ने फिलिस्तीन ही को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। मिसर, योरप और

अमरीका में यात्रा की और सदैव अपने पिता के मन के सिद्धान्तों को समझाते और अपने दैनिक जीवन में उन्हें कार्यरूप में लाकर प्रचलित करते रहे और संसार भर में अपने प्रिय जनों को व्यवहारिक प्रेरणा देते और उन का पथ-प्रदर्शन करते रहे। सन १९२१ में आप ने हैफा (फिलस्तीन) में शरीर त्याग किया और जैसा पहले कहा जा चुका है आप किरमल पर्वत पर हज़रत बाब के रौज़े के एक कमरे में दफ्न किये गये।

आप के मृत्युलेखानुसार मैं (आप का ज्येष्ठ दौहित्र) बहाई मत का पहला वली और बैतुलअद्ल अमूमी (न्यायाधिकरण) का अध्यक्ष नियुक्त हुआ। बैतुलअद्ल अमूमी मेरे

साथ मिल कर हज़रत बहाउल्लाह के दिये हुये नियमों के अनुसार पूर्व और पश्चिम की बहाई संस्थाओं के कामों का पथप्रदर्शन किया करेगा। हज़रत अब्दुलबहा के परलोक गमन के बाद मिल्ली (राष्ट्रीय) और महल्ली (स्थानीय) महफ़िलें सारे संसार में स्थापित हुईं। यह महफ़िलें वह आधारशिलायें हैं जिन पर बैतुल-अद्ल अमूमी का भवन तैयार होगा।

तेहरान को ताजी सूचनाओं से पता चलता है कि ईरान में ५०० से अधिक नगरों में बहाई रूहानी महफ़िलें स्थापित हो चुकी हैं। संसार के प्रत्येक महाद्वीप में बहाई संस्थायें पाई जाती है। मिल्ली महफ़िलें संयुक्त राज्य अमरीका व कैनेडा, हिन्दुस्तान व ब्रह्मा, इंगलिस्तान,

जर्मनी व आस्ट्रिया, ईरान, इराक़, मिसर और आस्ट्रेलिया में स्थापित होकर काम कर रही हैं। कफ़काज़, तुर्किस्तान और दूसरे देशों में इस प्रकार की महफ़िलें स्थापित होने को हैं।

फ्रांस, स्विटज़रलैंड, इटली, नार्वे, स्वीडन, हालैंड, डेनमार्क, तुर्की, रोमानिया, बलगेरिया, योगोस्लाविया, यूनान, अलबानिया, ऐबंसीनिया, चीन, जापान, ब्राज़ील और दक्षिणी अफरीका में महल्ली महफ़िलें स्थापित हो चुकी हैं।

विभिन्न सम्प्रदायों के ईसाई, सुन्नी तथा शीया मुसलमान, यहूदी, हिन्दू, सिख, जरतश्ती और बौद्ध मत के अनुयाइयों ने बड़े समारोह से इस की सत्यता की पुष्टि की है और इस के ईश्वर की ओर से होने को मान लिया है। इन

लोगों ने बहाई मत के प्रभावाधीन पहले समस्त मतों के जन्मदाता की शिक्षाओं की मौलिक एकता को स्वीकार कर लिया है और इस के दिन प्रति दिन उन्नति करते हुये नियमों और सिद्धान्तों की बनावट और उन के सार को स्वतन्त्रता से मान लिया है। यह सारे केन्द्र एक मात्र संस्था एक मात्र विभाग के अंगों के रूप से काम कर रहे हैं। इस संस्था का आध्यात्मिक और प्रबंधक केन्द्र अक्का और हैफा के दो नगर हैं जो एक दूसरे के निकट स्थित हैं।

Printed by D. C. Narang, at the H. B. Press, Lahore.
Published by Isfandiar Bakhtiari, Secretary Baha'i Publishing Committee of Baha'is of India & Burma, Baha'i Hall, Karachi.